यहाँ बैठे हो, शिवबाबा की याद में तो हो। जानते हो वो हमको सुखधाम का मालिक फिर से बना रहे हैं। बच्चों की बुद्धि अंदर कितनी खुशी होनी चाहिए। यहाँ बैठे हो, बच्चों को खज़ाना तो मिलता है ना। अनेक प्रकार के कॉलेजों में, यूनिवर्सिटियों में किसकी बुद्धि में यह बातें नहीं रहतीं। तुम ही जानते हो बाबा हमको फिर से स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। यह खुशी तो रहनी चाहिए ना। इस समय और सब खयालात नि(काल) कर एक बाप को ही याद करना है। यहाँ जब बैठते हो तो बुद्धि में यह नशा रहना चाहिए, हम अब सुखधाम के मालिक बन रहे हैं। सुख और शांति का वर्सा हम कल्प–2 लेते हैं। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते। कल्प पहले भी बहुत ही मनुष्य अज्ञान अंधेरे कुंभकरण की नींद में सोए खतम हो गए थे। फिर भी ऐसे ही होगा। यह भी बच्चे समझते हैं हमको बाबा ने एडॉप्ट किया है वा हमने शिवबाबा की धर्म की गोद ली है, जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। अब हम ब्राह्मण हैं। हम सच्चा–2 गीता पाठ सुन रहे हैं। हम बाबा से फिर से राजयोग और ज्ञान बल से वर्सा ले रहे हैं। ऐसे–2 खयालात अंदर में आना चाहिए। बाप भी आकर खुशी की बात बताते हैं। बाप जानते हैं बच्चे काम चिक्षा पर बैठ काले, भस्मीभूत हो गए हैं। इसलिए हम अमरलोक से मृत्युलोक में जाता हूँ। तुम फिर कहती हो हम मृत्युलोक से अमरलोक में (जा)ते हैं। बाप कहते हैं मैं मृत्युलोक में जाता हूँ, जहाँ सबकी मृत्यु हो गई है उनको फिर से अमरलोक ले जाता हूँ। शास्त्रों में तो क्या–2 लिख दिया है। वो सर्वशक्तिवान है, जो चाहे सो कर सकता है; परन्तु बच्चे (जानते) हैं उनको बुलाया ही जाता है हे पतित–पावन बाबा आओ। दुख हर सुख दो। इसमें जादू की वा तुलसम की कोई बात नहीं। बाप आते हैं बच्चों को काँटे से फूल बनाने। तुम जानते हो हम ही सुखधाम में देवताएँ थे। सतोप्रधान थे। हरेक को सतोप्रधान से फिर तमोप्रधान में आना ही है। बच्चों को यहाँ बैठने समय तो और ही मज़ा आना चाहिए। बाप को सारी दुनिया याद करती है– हे लिबरेटर, हे गाइड, हे पतित–पावन आओ। बुलाते तब हैं जबकि रावण राज्य में हैं। सतयुग में थोड़े ही बुलावेंगे। यह बातें बड़ी सहज समझ की हैं; परन्तु माया ऐसी है एकदम भ्रष्ट बुद्धि बना देती है। गवर्मेन्ट खुद कहती है भ्रष्टाचारी राज्य है; परन्तु अपन को कोई भ्रष्टाचारी समझते नहीं हैं। देवताओं के आगे गाते भी हैं आप सर्वगुण... हम नीच, पापी हैं। तुम्हारे आगे वा साधुओं के आगे ऐसे नहीं कहेंगे। देवताओं के आगे कहते हैं मैं निर्गुण हारे में... शिव के आगे भी यह महिमा नहीं करते। अक्सर करके लक्ष्मी–नारायण के आगे जास्ती कहते हैं। अब तुम सम(झते) हो इन लक्ष्मी–नारायण को ऐसा किसने (ब)नाया। तुम उनके जन्मों की कहानी बताते हो। पहले नम्बर में .... 84 का चक्कर यही खावेंगे। यह बातें सिवाए तुम्हारे और कोई की बुद्धि में नहीं आवेगी। बिल्कुल पत्थरबुद्धि हैं। तुम सतयुग से लेकर सबकी हिस्ट्री को जानते हो– सतयुग से लेकर कौन–2 कितने जन्म लेते हैं, क्या–2 बनते हैं। यह किसने सुनाया? कहेंगे, भगवान ने। उनके सिवाए और कौन सुना सकेंगे। बाप कहते हैं मैं तुमको तुम्हारे 84 जन्मों की कहानी सुनाता हूँ। तो ज़रूर समझेंगे इनको उसने सुनाया है। बाप की भी महिमा करेंगे, टीचर–सत्गुरु की भी महिमा करेंगे। तीनों एक ही है। यह तुम्हारी बुद्धि में है वो बाप भी है, टीचर भी है, सत्गुरु भी है। शिवबाबा का धंधा ही यह है पतितों को पावन बनाना। पतित ज़रूर दुखी होंगे। बाप कहते हैं मैं पतितों को पावन बनाने आता हूँ। सतोप्रधान सुखी, तमोप्रधान दुखी होते हैं। इन देवताओं का कितना सतोगुणी स्वभाव है। सतोगुणी होते हैं सतयुग में। तमोगुणी कलियुग में। बाकी हाँ, मनुष्य नम्बरवार अच्छे और बुरे होते हैं। सतयुग में कब ऐसे नहीं कहेंगे कि यह खराब है, यह ऐसा है। वहाँ बुरे लक्षण कोई होते ही नहीं। वो है ही दैवी सम्प्रदाय। हाँ, साहुकार और गरीब हो सकते हैं। बाकी अच्छे वा बुरे गुणों की .... वहाँ नहीं होती। सब सुखी रहते हैं। दुख की बात (नहीं)। नाम ही है सुखधाम। तो बच्चों को बाप से पूरा वर्सा लेने पुरुषार्थ करना है। अपना चित्र और यह लक्ष्मी–नारायण का चित्र भी रख सकते हैं। कहेंगे, कोई तो इनको सिखाने वाला होगा। यह तो भगवानुवाच्य है। श्री कृष्ण तो फिर भी मनुष्य है। (भगवान) को अपना

शरीर नहीं है। वो आकर लोन लेते हैं। गाया हुआ भी है भागीरथ। तो ज़रूर रथ पर विराजमान है। बैल पर थोड़े आवेंगे। शिव और शंकर इकट्ठा कर दिया है तब बैल दे दिया है। तो बाप कहते हैं तुमको कितना खुश होना चाहिए, हम बाप के बने हैं। बाप भी कहते हैं तुम हमारे हो। बाप को पद पाने की खुशी नहीं है। टीचर तो टीचर है। पढ़ाना है। बाप कहते हैं– बच्चे, मैं सुख का सागर हूँ। अब तुमको अति इन्द्रिय सुख भासता है, जब हमने तुमको एडॉप्ट किया है। एडॉप्टेशन तो किसम–2 की होती है। पुरुष भी कन्या को एडॉप्ट करते हैं। वो समझती है यह हमारा पति है। अब तुम समझते हो शिवबाबा ने हमको एडॉप्ट किया है। दुनिया में इन बातों को कोई भी नहीं समझते। उन्हों की वो एडॉप्टेशन है एक/दो पर काम कटारी चलाने की। समझो, कोई राजा गोद में बच्चा लेते हैं, एडॉप्ट करते हैं सुख के लिए; परन्तु वो है अल्पकाल का सुख। सन्यासी भी एडॉप्ट करते हैं। वो कहेंगे, यह हमारा गुरु है। वो कहेंगे, यह हमारा फॉलोअर है। कितनी एडॉप्टेशन है। बाप बच्चे को एडॉप्ट करते हैं, उनको सुख तो देते हैं फिर उनको शादी कराने से फिर जैसे दुख का वर्सा दे देते हैं। गुरु का एडॉप्टेशन फिर भी कुछ अच्छा है। पवित्रता की एडॉप्टेशन है। यह है महान पवित्र बनने की। यहाँ बाप कहते हैं तुम मेरे बच्चे हो, बच्चे कहते हैं– बाबा, हम आपके हैं। यह एडॉप्टेशन कितनी फर्स्ट क्लास है। यह है ईश्वर की एडॉप्टेशन। आत्माओं को अपना बच्चा बनाते हैं। अब तुम बच्चों ने सबकी एडॉप्टेशन को देख लिया है। सन्यासियों के होते हुए भी गाते रहते हैं हे पतित–पावन आओ। आप आकर हमको एडॉप्ट कर पावन बनाओ। सब ब्रदर्स तो हैं; परन्तु जबकि आकर अपना बनावे ना। कहते हैं– बाबा, हम दुखी हो पड़े हैं। रावण राज्य का भी अर्थ नहीं समझते। एफीजी बनाकर जलाते रहते हैं। जैसे कोई किसको दुख देते हैं तो समझते हैं इस पर केस चलाना चाहिए; परन्तु यह किसको पता नहीं है कि रावण सबसे बड़ा दुश्मन है। उनकी एफीजी वर्ष–2 जलाते हैं; परन्तु पत्थर बुद्धि बुद्धू कितने मूर्ख हैं जो उनको यह पता नहीं है कि रावण क्या चीज़ है। अर्थ ही नहीं समझते। यह कबसे दुश्मन बना है? यह है कौन? आखिर भी दुश्मन मरेगा या नहीं? इस दुश्मन का तुमको ही मालूम है। उनको विजय पाने लिए तुमको एडॉप्ट किया है। यह भी तुम बच्चे जानते हो विनाश होना है जबकि एटामिक बॉम्ब्स भी बने हैं। इस ज्ञान यज्ञ से ही यह विनाश ज्वाला निकली है। अब तुम जानते हो हम रावण पर विजय पाए फिर नई सृष्टि में राज्य करेंगे। बाकी तो यह सब गुड़ियों का खेल है। रावण की गुडी तो बहुत खर्चा करती है। मनुष्य बहुत पैसे फालतू गँवाते हैं। अब तुम बच्चे समझते हो कितना रात–दिन का फर्क है। वो भटकते, धक्के खाते रहते हैं। हम अब श्रीमत पर श्रेष्ठा(चा)री सतयुगी स्वराज्य पा रहे हैं। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ सतयुग स्थापन करने वाला शिवबाबा हमको श्रेष्ठ देवता विश्व का मालिक बनाते हैं। श्री–2 शिवबाबा हमको श्री बनाते हैं। श्री–2 सिर्फ उस एक को ही कहा जाता; क्योंकि वो तो पुनर्जन्म में आते नहीं हैं। आजकल तो देखो सन्यासी आदि सबने अपने ऊपर नाम रख दिया है श्री–2 फलाना। कितना फर्क हो गया है। डबल टोपी अपने सिर पर रख दी है। वास्तव में श्री विकारी राजाओं को भी (नहीं) कह सकते। इतना समझते हैं कि यह देवताएँ होकर गए हैं। यह नहीं समझते कि हम ही वो पूज्य थे, अब पुजारी बने हैं। कितनी गुह्य बातें हैं। अब तुम्हारी कितनी विशाल बुद्धि होनी चाहिए। तुम जानते हो हम इस पढ़ाई से डबल सिरताज बनते हैं। हम ही डबल सिरताज थे। अब तो सिंगल ताज भी नहीं है। पतित हैं ना। यहाँ लाइट का ताज किसको लगा नहीं सकते। सन्यासियों को भी नहीं; क्योंकि भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। इन चित्रों में जहाँ तुम तपस्या में बैठे हो वहाँ लाइट का ताज नहीं देना है। तुमको डबल सिरताज भविष्य में बनना है। तुम बच्चे अब जानते हो, खुशी में रहते हो। हम बाबा से डबल सिरताज महाराज–महारानी बनने लिए आए, यह खुशी होनी चाहिए। शिवबाबा को याद करना चाहिए तो पतित से पावन बन स्वर्ग का मालिक बन जावेंगे। इसमें कोई तकलीफ की बात ही नहीं। यहाँ तुम स्टूडेन्ट बैठे हो। वहाँ आकर मित्र–संबंधी .....(अधूरी मुरली)